eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 02, February 2026

विकसित भारत@2047: परिवर्तन की दिशा में संस्कृत और भारतीय संस्कृति की भूमिका

डॉ0 उमा सिंह[1]
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर–संस्कृत, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस राजकीय महिला स्ना0 महा0, अलीगंज, लखनऊ

Received: 20 Feb 2026 Accepted & Reviewed: 25 Feb 2026, Published: 28 Feb 2026

Abstract

भारत के विकास का सपना केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे राष्ट्र की परिकल्पना है जो सांस्कृतिक रूप से आत्मनिर्भर, नैतिक रूप से दृढ़ और आध्यात्मिक रूप से जागरूक हो। 'विकसित भारत@2047 केवल आर्थिक सूचकांकों में प्रगति का कार्यक्रम नहीं, बल्कि यह एक संस्कृति–सापेक्ष राष्ट्रीय पुनर्जागरण का संकल्प है, जिसमें भारत की आत्माकृसंस्कृत और भारतीय संस्कृतिकृ केन्द्रीय भूमिका निभाती है। संस्कृत केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवंत सभ्यता की अभिव्यक्ति है जिसने मानव जीवन के प्रत्येक आयाम –धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष– को सुसंगठित रूप में प्रतिपादित किया। भारतीय संस्कृति का यह दर्शन, जो संतुलन और समन्वय की परंपरा पर आधारित है, आज की वैश्विक विकास अवधारणाओं से कहीं अधिक व्यापक और समग्र है। जहाँ पश्चिमी आधुनिकता प्रगति को भौतिक मानकों से मापती है, वहीं भारतीय दृष्टिकोण इसे आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक समरसता से जोड़ता है। इसीलिए 'विकसित भारत@2047' का निर्माण केवल उद्योग, प्रौद्योगिकी और शहरीकरण का प्रश्न नहीं, बल्कि मानवता के पुनर्निर्माण का भी विषय है। संस्कृत ग्रंथों में निहित ज्ञान–चाहे वह ऋग्वेद का वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो, उपनिषदों का आत्मबोध, या महाभारत और रामायण की नैतिक चेतना–आज भी विकास के मार्ग को दिशा प्रदान कर सकते हैं। संस्कृत की यह ज्ञान परंपरा केवल ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि समकालीन भारत के सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स के लिए एक वैकल्पिक सांस्कृतिक रूपरेखा प्रस्तुत करती है। नीति आयोग–2021 के विजन डाक्यूमेन्ट फॉर इण्डिया@2047 में भी इस बात का संकेत मिलता है कि भारत की विकास यात्रा तभी संतुलित और टिकाऊ होगी जब इसमें सांस्कृतिक पूँजी और मानवीय मूल्य का समावेश किया जाए। इस दृष्टि से संस्कृत और भारतीय संस्कृति केवल परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि विकास की आत्मा और दिशा हैं।

संस्कृत के पुनर्जागरण से न केवल भाषा–संरक्षण होगा, बल्कि भारतीय दर्शन, साहित्य, विज्ञान और नैतिकता के उन स्त्रोतों को पुनर्जीवित किया जा सकेगा जो 'आत्मनिर्भर भारत' की नींव बन सकते हैं। संस्कृत की तार्किकता, व्याकरणिक शुद्धता और वैज्ञानिक संरचना (पाणिनि अष्टाध्यायी से प्रेरित) इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कम्यूटेशनल लिंग्यूस्टिक जैसे क्षेत्रों में भी प्रासंगिक बनाती है। इस प्रकार, यह केवल प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि भविष्य के भारत के ज्ञान अवसंरचना की संभावित धुरी है। भारतीय संस्कृति की दृष्टि में विकास का अर्थ केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि 'पुरुषार्थ चतुष्टय–'धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष'–के संतुलित अनुसरण में निहित है। यह अवधारणा विकास को मानवीय और नैतिक धरातल पर पुनर्परिभाषित करती है। अतः 'विकसित भारत@2047' का वास्तविक अर्थ होगा–सांस्कृतिक रूप से विकसित, सामाजिक रूप से समरस और आध्यात्मिक रूप से संपन्न भारत।

प्रस्तुत शोध पत्र विकसित भारत की अवधारणा में संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति की भूमिका की विस्तार से विश्लेषणात्मक तरीके से अध्ययन करता है।

मुख्य बिन्दुः विकसित भारत@2047, भारतीय दर्शन, साहित्य, विज्ञान, नैतिकता, संस्कृत, संस्कृति, भाषा–संरक्षण।

Introduction

विकसित भारत का निर्माण केवल तकनीकी उन्नति या आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समग्र राष्ट्रीय पुनर्जागरण का संकल्प है, जिसमें सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और नैतिक उत्थान समान रूप से आवश्यक हैं (मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, 2020)। भारत की विकास यात्रा की वास्तविक दिशा तभी पूर्ण होगी जब इसमें उसकी आत्मा –संस्कृत और भारतीय संस्कृति– का समावेश होगा। भारत की पहचान सदियों से उसके मूल्यबोध, दर्शन और जीवन दृष्टि में निहित रही है, जिसे संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति ने जीवित रखा है। भारत अपनी प्राचीन परंपराओं, ज्ञान प्रणालियों और सांस्कृतिक विरासत के लिए विख्यात रहा है। 'विकसित भारत@2047' की अवधारणा इसी परंपरा के पुनर्जागरण का प्रतीक है। इसमें यह विश्वास निहित है कि आधुनिक भारत का विकास केवल जीडीपी वृद्धि या औद्योगिक विस्तार से नहीं मापा जा सकता, बल्कि सामाजिक सामंजस्य, मानवीय मूल्यों, और सांस्कृतिक स्थिरता के माध्यम से आंका जाना चाहिए (नीति आयोग 2021)। संस्कृत का योगदान इस दिशा में अद्वितीय है, क्योंकि यह केवल भाषा नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान–परंपरा की प्रमुख संवाहक है। वैदिक साहित्य, उपनिषद, वेदांग, स्मृतियाँ और दर्शन–ग्रंथ भारतीय जीवन की गहराइयों में उतरते हुए, व्यक्ति और समाज के नैतिक तथा आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त करते हैं। संस्कृत की व्याकरणिक शुद्धता, तार्किक संरचना और दार्शनिक गहराई इसे आधुनिक भाषाई विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कम्यूटेशनल लिंग्यूस्टिक जैसे उभरते क्षेत्रों में भी प्रासंगिक बनाती है (सुब्रमनियम 2020)। इस प्रकार, संस्कृत न केवल अतीत की धरोहर है बल्कि भविष्य के ज्ञान–समाज की आधारशिला भी है।

भारतीय संस्कृति का मूल तत्व 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे सार्वभौमिक मानवतावादी आदर्शों में निहित है। ये आदर्श आज के विभाजित, उपभोक्तावादी और पर्यावरण–संकटग्रस्त विश्व में संतुलन और समरसता के संदेशवाहक हैं। भगवद्गीता (2.47) और उपनिषदों में उल्लिखित कर्मयोग तथा आत्मबोध की अवधारणाएँ मानव जीवन को केवल भौतिक लक्ष्य से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक उद्देश्य प्रदान करती हैं। इस दृष्टि से, भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विकास का वह दर्शन प्रस्तुत करती है जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में संतुलन स्थापित करता है (राधाकृष्णन 1954)। वर्तमान में भारत की विकास नीतियाँ, जैसे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं, जिनमें शिक्षा को केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण न मानकर, मूल्य–आधारित जीवन दृष्टि के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया है। यह नीति भारतीय ज्ञान प्रणाली के पुनर्संस्थापन पर बल देती है, जिससे छात्र न केवल तकनीकी दक्षता प्राप्त करें बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक चेतना से भी संपन्न हों (राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020)।

अतः 'विकसित भारत@2047' की वास्तविक परिकल्पना केवल आर्थिक समृद्धि या भौतिक प्रगति की नहीं है, बल्कि यह उस नव–सांस्कृतिक भारत की है जो अपने प्राचीन ज्ञान–विवेक को आधुनिक संदर्भों में

पुनर्जीवित कर सके। यह भारत ऐसा होगा जो विज्ञान में प्रगतिशील, संस्कृति में जड़ित और नैतिकता में दृढ़ होगा कृ एक ऐसा भारत जो अर्थ के साथ–साथ धर्म को भी समान महत्त्व दे, और जहाँ विकास का अर्थ केवल संसाधन–सृजन नहीं, बल्कि मानवीय उत्थान हो।

विकसित भारत@2047 की संकल्पना– 'विकसित भारत@2047' केवल एक प्रशासनिक या आर्थिक दृष्टि नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण का प्रतीक है। भारत की स्वतंत्रता के सौवें वर्ष तक विकसित राष्ट्र बनने की यह संकल्पना, अपनी जड़ों में गहराई से जुड़ी आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक स्वाभिमान और ज्ञान–आधारित प्रगति के सिद्धांतों को समाहित करती है (नीति आयोग 2020)। इस विजन का मूल दर्शन यह है कि भारत का विकास तभी स्थायी और सार्थक हो सकता है जब वह अपनी परंपराओं, सांस्कृतिक मूल्यों और वैचारिक विरासत को आधुनिकता के साथ जोड़ सके (सेन गुप्ता, 2022)। भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक उसे विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करना इस संकल्प का मूल उद्देश्य है। यह केवल आर्थिक प्रगति का लक्ष्य नहीं, बल्कि एक समग्र मानव–केंद्रित दृष्टि का प्रतीक है। इस मॉडल में पाँच प्रमुख स्तंभों का उल्लेख किया जा सकता है–1. आत्मनिर्भरता (आर्थिक और तकनीकी स्वावलंबन) 2. विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवाचार, 3. शिक्षा और मानव पूंजी का सशक्तीकरण, 4. संस्कृति और नैतिक मूल्यों पर आधारित शासन मॉडलय, 5. पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास (विजन डॉक्यूमेन्ट, नीति आयोग, 20211)। इस परिप्रेक्ष्य में 'विकसित भारत' का तात्पर्य केवल जीडीपी वृद्धि नहीं, बल्कि ग्रास नेशनल हैप्पीनेस और सांस्कृतिक अक्षुण्णता को समान महत्त्व देने से है। जैसा स्वामी विवेकानन्द ने कहा था "राष्ट्र का उत्थान तभी संभव है जब उसकी आत्मा जागृत हो।" (विवेकानन्द 1897)। इस आत्मा का प्रतीक भारत की संस्कृति और उसकी भाषाई विरासत, विशेषकर संस्कृत है।

आधुनिक भारत और सांस्कृतिक पुनर्जागरण– विकसित भारत की अवधारणा आधुनिकता और परंपरा के सार्थक समन्वय की मांग करती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत@2047' विजन में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत का भविष्य केवल तकनीकी श्रेष्ठता पर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सशक्तिकरण पर भी निर्भर है। उन्होंने कहा है कि "विकास का अर्थ केवल भौतिक प्रगति नहीं, बल्कि हमारी जड़ों से जुड़कर आत्मबल का विकास है" (मोदी 2022)। इस विचारधारा में संस्कृति को विकास का केंद्र–बिंदु माना गया है। मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर (2023) के अनुसार, भारत में संस्कृति केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संश्लेषण और राष्ट्रीय पहचान का साधन है। संस्कृत और भारतीय दर्शन के अध्ययन से नागरिकों में न केवल नैतिक चेतना जागृत होती है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होती है (राधाकृष्णन 1954)। शिक्षा नीति 2020 इसी दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, जिसमें भारतीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा के मुख्यधारा में पुनर्स्थापित किया गया है। यह नीति ज्ञान, कौशल, और संस्कारकृतीनों के समन्वय पर आधारित है। अतः यह कहना समीचीन होगा कि विकसित भारत का निर्माण सांस्कृतिक पुनर्जागरण के बिना संभव नहीं (एन0ई0पी0 2020)।

वैश्विक पहचान और संस्कृति– 'विकसित भारत@2047' की परिकल्पना केवल आंतरिक सशक्तिकरण की नहीं, बल्कि वैश्विक नेतृत्व की भी है। भारत का नेतृत्व केवल आर्थिक या सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि उसके सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक आदर्शों से निर्मित होगा (यूनेस्को 20118)। भारत की "सॉफ्ट पावर"–योग, ध्यान, आयुर्वेद, संगीत, और साहित्य– आज विश्व स्तर पर भारतीय सभ्यता की पहचान बन चुकी है। यूएन

जनरल एसेम्बली द्वारा 2014 में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को मान्यता दिए जाने से यह स्पष्ट हुआ कि भारत की सांस्कृतिक परंपराएँ केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि आधुनिक जीवन के लिए भी प्रासंगिक हैं (यूएन योगा रिज्यूलूशन 2014)।

संस्कृति आधारित यह वैश्विक नेतृत्व भारत को उस दिशा में ले जा रहा है जिसे रविन्द्रनाथ टैगोर ने ''स्पीचुरल इन्टरनेशनल'' कहा था–एक ऐसा अंतरराष्ट्रीय समाज जिसमें नैतिकता, समरसता और करुणा के भारतीय आदर्शों का प्रभाव व्यापक हो (टैगोर 1931)। इस प्रकार, 'विकसित भारत@2047' की संकल्पना का मूल तत्व केवल आर्थिक श्रेष्ठता नहीं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता और वैश्विक नैतिक नेतृत्व है। यह भारत के लिए "विश्वगुरु" बनने का मार्ग प्रशस्त करती है–जहाँ विकास का अर्थ आत्मोत्थान और विश्वकल्याण दोनों को समाहित करता है।

संस्कृत की आवश्यकता एवं आधुनिक भारत में उसका योगदान– संस्कृत केवल एक प्राचीन भाषा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक चेतना और बौद्धिक परंपरा की जीवंत धारा है। यह वह माध्यम है जिसके द्वारा भारतीय मनीषियों ने वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, व्याकरण, आयुर्वेद, गणित, नाट्य और काव्य के विस्तृत ज्ञानकोष का निर्माण किया। जैसा कि पाणिनि की अष्टाध्यायी में देखा जा सकता है, संस्कृत न केवल एक व्याकरणिक प्रणाली का उदाहरण है, बल्कि यह एक सुसंगठित वैचारिक दृष्टिकोण की प्रतिनिधि भी है, जो भाषा को तर्क, दर्शन और व्याख्या से जोड़ती है (पाणिनि अष्टाध्यायी)। आयुर्वेद के शास्त्रों में संस्कृत की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सुश्रुत संहिता और चरक संहिता जैसे ग्रंथ न केवल चिकित्सा ज्ञान के आधार हैं, बल्कि वे भारतीय वैज्ञानिक परंपरा के नैतिक आयामों को भी स्पष्ट करते हैं (सुश्रुत संहिता, चरक संहिता)। संस्कृत ग्रंथों में निहित यह समग्र दृष्टिकोण आधुनिक वैज्ञानिक सोच में अंतरविषयक समग्रता की अवधारणा का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है। आधुनिक युग में संस्कृत के महत्व को पुनः पहचाना जा रहा है। नासा जैसे संस्थानों ने यह स्वीकार किया है कि संस्कृत कंप्यूटर विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए उपयुक्त संरचना रखती है क्योंकि इसकी व्याकरणिक प्रणाली अत्यंत तर्कसंगत और नियमबद्ध है (रिक ब्रिगस्, एआई मैगजीन 1985)। इसी प्रकार, विदेशी विश्वविद्यालयों–जैसे ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड, और टोक्यो विश्वविद्यालय–में संस्कृत अध्ययन के नए विभाग स्थापित किए गए हैं, जो यह दर्शाते हैं कि यह भाषा केवल प्राचीन ग्रंथों तक सीमित नहीं बल्कि आधुनिक बौद्धिक विमर्श का भी एक हिस्सा बन रही है (पोलाक, द लैंग्वेज ऑफ द गॉडस् इन द वर्ल्ड ऑफ मेन, 2006)। भारत में भी संस्कृत का पुनर्जागरण एक सांस्कृतिक और शैक्षणिक आंदोलन का रूप ले रहा है।

नई शिक्षा नीति (एन0ई0पी0 2020) ने संस्कृत को न केवल एक वैकल्पिक भाषा के रूप में बल्कि भारतीय ज्ञान प्रणाली के केंद्रीय घटक के रूप में प्रस्तुत किया है। नीति दस्तावेज में संस्कृत को "विज्ञान, गणित, दर्शन, और तर्कशास्त्र की जननी" कहा गया है (मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन, नेशनल एजूकेशन पॉलिसी, 2020)। इसके अतिरिक्त, संस्कृत विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहन, डिजिटल ग्रंथालयों की स्थापना, और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन संस्कृत अध्ययन के नए आयाम खोल रहे हैं। संस्कृत के इस पुनर्जागरण के साथ भारतीय संस्कृति के मूल्यकृधर्म, अर्थ, काम, मोक्षकृभी पुनर्स्थापित हो रहे हैं। आधुनिक भारत के संदर्भ में यह पुनर्जागरण केवल भाषाई या शैक्षणिक नहीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का संकेत है। संस्कृत, जो "भाषा से अधिक एक दर्शन है" (राधाकृष्णनन, 42)। भारत को नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सुदृढ़ करने की दिशा में मार्गदर्शक बन सकती है। संस्कृत के प्रति पुनः जागृति को केवल परंपरागत

गौरव की पुनर्स्थापना के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि यह एक सांस्कृतिक नवाचार की प्रक्रिया भी है। आधुनिक भारत के डिजिटल और वैश्विक युग में संस्कृत का स्थान "विरासत के पुनराविष्कार" के रूप में विकसित हो रहा है। जहाँ एक ओर यह भारत की प्राचीन बौद्धिक जड़ों को पुनर्जीवित करती है, वहीं दूसरी ओर यह सॉफ्ट पॉवर डिप्लोमेसी का एक उपकरण भी बन रही है (सिंह, 2022)।

संस्कृत की इस वैश्विक स्वीकृति के बावजूद, यह भी आवश्यक है कि भारत में इसके अध्ययन और शिक्षण के लिए आधुनिक पद्धतियाँ अपनाई जाएँ। पणिनी ग्रामर बेस्ड कम्पूटेशनल लिंग्यूस्टिकस् जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान से यह स्पष्ट है कि संस्कृत की वैज्ञानिक संरचना को यदि डिजिटल युग के अनुरूप पुनर्परिभाषित किया जाए, तो यह भविष्य की कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भाषा तकनीक का आधार बन सकती है (सुब्रमण्यम 20211)।

संस्कृत का पुनर्जागरण केवल अतीत की पुनर्स्मृति नहीं, बल्कि भारत के भविष्य के निर्माण का उपकरण है। यह ज्ञान, संस्कृति और विज्ञान की त्रिवेणी का संगम प्रस्तुत करती है। विकसित भारत@2047 की दिशा में, संस्कृत वह माध्यम बन सकती है जो भारतीयता की आत्मा को आधुनिकता के साथ जोड़ती है, एक ऐसा भारत जो तकनीकी दृष्टि से प्रगतिशील और सांस्कृतिक रूप से प्रबुद्ध हो। भारतीय संस्कृति का महत्व और विकसित भारत की दृष्टिभारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और सतत विकसित परंपराओं में से एक है, जिसका आधार मानवता, सह–अस्तित्व और सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांतों पर टिका है। वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् "समस्त विश्व एक परिवार है"कृका विचार भारतीय संस्कृति की आत्मा है, जो वैश्विक स्तर पर शांति, सद्भाव और सहिष्णुता का सन्देश देती है (महोपनिषद 6.71)। आधुनिक भारत के संदर्भ में यह विचार सतत विकास और वैश्विक सहयोग की दिशा में नैतिक मार्गदर्शन प्रदान करता है (विजन डॉक्यूमेन्ट, नीति आयोग, 2021)।

भगवद्गीता और उपनिषदों में वर्णित सत्य, अहिंसा, धर्म और समरसता के सिद्धांत केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक नीति के आधार भी हैं। गीता में कहा गया है–"स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" (भागवद् गीता, 3–35) अर्थात् आत्मानिष्ठ कर्म और नैतिक जिम्मेदारी ही समाज और राष्ट्र के विकास का मूल है। यह दर्शन आज के भारत में नैतिक नेतृत्व और उत्तरदायी शासन के मूल्यों से जुड़ता है (राधाकृष्णनन 102)।

भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्य– भारतीय संस्कृति चार पुरुषार्थों–धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष–के संतुलन पर आधारित है। धर्म सामाजिक व्यवस्था का नैतिक आधार है, अर्थ आर्थिक समृद्धि का साधन, काम जीवन के सुखों का नियमन, और मोक्ष आत्मिक मुक्ति का लक्ष्य (दासगुप्ता 58)। यह समग्र दृष्टिकोण व्यक्ति और समाज दोनों के विकास का संतुलन स्थापित करता है। आधुनिक भारत के विकास मॉडल में इस दर्शन का समावेश समग्र विकास की अवधारणा को मूर्त रूप देता है, एक ऐसा विकास जो आर्थिक वृद्धि के साथ–साथ आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रगति को भी सम्मिलित करता है (सेन 2021)। सांस्कृतिक मूल्यों की यह परंपरा सहिष्णुता, समानता, और सार्वभौमिक मानव कल्याण को प्रोत्साहित करती है। महात्मा गांधी ने भी भारतीय संस्कृति को "नैतिकता और अहिंसा का विज्ञान" कहा है (गांधी, यंग इण्डिया, 1924) जो भारत के लोकचिंतन और राजनीतिक विचार दोनों में व्याप्त है। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि राष्ट्र–निर्माण की प्रेरक शक्ति है।

शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा– भारतीय संस्कृति का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा है। शिक्षा के माध्यम से ही भारतीय ज्ञान परंपराएँ–जैसे न्याय, वेदांत, आयुर्वेद, गणित, नाट्यशास्त्र– पीढ़ियों तक स्थानांतरित होती रही हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन0ई0पी0) इस परंपरा के पुनरुद्धार की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। नीति दस्तावेज में कहा गया है कि "भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ भारतीय शिक्षा का अभिन्न हिस्सा बनेंगी, जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता, सहिष्णुता और राष्ट्रीयता का विकास होगा" (एन0ई0पी0 2020)। एन0ई0पी0 ने शिक्षा को केवल रोजगारपरक नहीं, बल्कि मूल्यपरक बनाने पर बल दिया है। इसमें संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की अनुशंसा की गई है। यह केवल भाषाई सुधार नहीं बल्कि "मूल्य आधारित शिक्षण पद्धति" की पुनर्स्थापना है (पाठक 2021)। इस प्रकार शिक्षा प्रणाली भारतीय संस्कृति के मूल्यों को न केवल संरक्षित करती है बल्कि उन्हें समसामयिक संदर्भ में भी प्रासंगिक बनाती है।

सांस्कृतिक योगदान से राष्ट्रीय विकास– संस्कृति किसी राष्ट्र के सामाजिक ताने–बाने का केंद्र होती है। भारत के संदर्भ में यह संस्कृति के माध्यम से विकास" की अवधारणा के रूप में विकसित हो रही है। नेतृत्व, नीति निर्माण और सामुदायिक विकास के क्षेत्र में भारतीय संस्कृति की भूमिका उल्लेखनीय है। उदाहरण के लिए, पंचायती राज प्रणाली, सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसी अवधारणाएँ भारतीय परंपरा से प्रेरित लोकतांत्रिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती हैं (कुमार 2022)। योग और ध्यान, जो भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, आज वैश्विक स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य, उत्पादकता और कार्यक्षमता बढ़ाने के प्रभावी साधन बन चुके हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2021 की रिपोर्ट में कहा है कि योग और ध्यान से स्ट्रेस मैनेजमेन्ट और मानसिक स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार होता है (डब्ल्यू0एच0ओ0 20211)। अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक और मानवीय जीवन–दर्शन भी है।

शिक्षा और सतत विकास में संस्कृति का समन्वय– भारत के सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में संस्कृति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यूनेस्को की 2022 की रिपोर्ट में कहा गया है कि "Culture is both a driver and enabler of sustainable development" (यूनेस्को 2022)। भारत में एन0ई0पी0 इसी सिद्धांत का अनुसरण करती है, जहाँ शिक्षा और संस्कृति को एकीकृत दृष्टि से देखा गया है। संस्कृत और भारतीय संस्कृति का पाठ्यक्रम में समावेश विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता, नेतृत्व क्षमता, और नैतिक चेतना को सशक्त बनाता है। यह दृष्टिकोण विकसित भारत@2047 के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में एक ठोस कदम है। भारतीय संस्कृति की परंपरा भारत को केवल एक राष्ट्र नहीं, बल्कि एक "सांस्कृतिक राष्ट्र" के रूप में परिभाषित करती है। विकसित भारत का निर्माण तभी संभव है जब विकास केवल जी0डी0पी0 या आर्थिक संकेतकों तक सीमित न रहे, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक प्रगति को भी सम्मिलित करे। संस्कृत और भारतीय संस्कृति इस समग्र विकास की आधारशिला हैंकृवे भारत को "विकसित" ही नहीं, "प्रबुद्ध" भी बनाती हैं।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारत– भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मूल आधार "एकात्म मानव दर्शन" है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के संतुलन और समन्वय को स्थापित करता है (उपाध्याय, एकात्म मानववाद, 1965)। यह दर्शन केवल राजनीतिक विचारधारा नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक नीति का मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में राष्ट्रवाद का अर्थ केवल भूगोल या सत्ता तक सीमित

नहीं हैय यह नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक नेतृत्व का दर्शन प्रस्तुत करता है। संस्कृति और राष्ट्र के समन्वय से नागरिकों में सामाजिक उत्तरदायित्व, सामूहिक कल्याण और व्यक्तिगत विकास का संतुलन बनता है।

वैश्विक प्रभाव और सांस्कृतिक कूटनीति– भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसी परंपराओं के माध्यम से, विश्व स्तर पर सॉफ्ट पॉवर का प्रभाव बढ़ा रही है। यूनेस्को और डब्ल्यू0एच0ओ0 जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने योग और आयुर्वेद को वैश्विक स्वास्थ्य और शिक्षा के महत्वपूर्ण घटक के रूप में मान्यता दी है (यूनेस्को 2022 और डब्ल्यू0एच0ओ0 2021)। सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से भारत की अंतरराष्ट्रीय पहचान मजबूत हो रही है, और यह वैश्विक मंच पर नैतिक और सांस्कृतिक नेतृत्व का प्रतीक बन रही है। संस्कृति आधारित नीतियाँ, चाहे वह ग्रामीण विकास परियोजनाएँ हों या शहरी शिक्षा कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक समरसता के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होती हैं (चक्रवर्ती 2020)। संस्कृत और भारतीय संस्कृति न केवल भारत के अतीत की धरोहर हैं, बल्कि यह विकसित भारत@2047 के लिए ज्ञान, नैतिकता और सांस्कृतिक नेतृत्व का आधार भी हैं। डिजिटल तकनीक, विज्ञान और संस्कृति का संयोजन, सतत विकास, महिला सशक्तिकरण और वैश्विक प्रभाव के माध्यम से भारत को एक सांस्कृतिक और ज्ञानप्रधान राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकता है। इस दृष्टि में विकसित भारत केवल भौतिक संपन्नता का नहीं, बल्कि आध्यात्मिक, नैतिक और बौद्धिक प्रगति का प्रतीक होगा।

विकसित भारत@2047 की चुनौतियाँ और अवसर– भारत के लिए विकसित राष्ट्र बनने की प्रक्रिया केवल आर्थिक और तकनीकी प्रगति तक सीमित नहीं है। इसमें सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक संतुलन को बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है। विकसित भारत@2047 की दिशा में कई चुनौतियाँ और अवसर समकालीन संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 1.आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन– विकसित भारत@2047 का एक मुख्य चुनौती आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखना है। वैश्विक तकनीकी, शिक्षा और आर्थिक प्रतिस्पर्धा में तेजी के साथ, भारतीय संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का संरक्षण एक कठिन कार्य है (विजन डॉक्यूमेन्ट, नीति आयोग, 2021)। यदि केवल पश्चिमी तकनीकी और आर्थिक मॉडल को अपनाया गया, तो यह भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के विस्थापन का कारण बन सकता है। संस्कृत और भारतीय संस्कृति इस संतुलन के लिए मार्गदर्शक हैं। उदाहरण के लिए, योग और आयुर्वेद जैसे प्राचीन ज्ञान–प्रणालियाँ आधुनिक स्वास्थ्य और जीवनशैली में सम्मिलित की जा सकती हैं। लेकिन इसके लिए एक सुसंगत नीति और शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो आधुनिक विज्ञान और परंपरा को जोड़ सके (पोलाक 2006)। 2. वैश्विकरण और सांस्कृतिक विस्थापन– वैश्विकरण ने आर्थिक और तकनीकी लाभ दिए हैं, परन्तु इसके साथ सांस्कृतिक होमोनाइजेशन और स्थानीय परंपराओं के ह्रास का खतरा भी उत्पन्न हुआ है। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में पश्चिमी मूल्यों का प्रभाव पारंपरिक सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को कमजोर कर सकता है (सेन 2021)। सांस्कृतिक विस्थापन को रोकने के लिए न केवल शिक्षा और नीति निर्माण बल्कि सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति का भी उपयोग किया जाना आवश्यक है। भारत की भाषा, कला, योग और आयुर्वेद जैसे संसाधनों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करके इसका समाधान किया जा सकता है (यूनेस्को 2022)।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 02, February 2026

विकसित भारत@2047 के सफल क्रियान्वयन से हमें निम्न अवसर प्रदान होंगे। 1. संस्कृति और संस्कृत का वैश्विक स्तर पर प्रचार– भारत के पास अपने प्राचीन ज्ञान और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का एक अद्वितीय अवसर है। योग, ध्यान, आयुर्वेद और संस्कृत अध्ययन के माध्यम से भारत सॉफ्ट पॉवर की भूमिका निभा सकता है। जैसे कि यूनेस्को और डब्ल्यू0एच0ओ0 ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों को मान्यता दी है, यह भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को बढ़ाने का अवसर प्रस्तुत करता है (यूएन योगा रिज्यूलूशन 2014)। 2. शिक्षा, तकनीकी नवाचार और नैतिक नेतृत्व के माध्यम से सतत विकास– विकसित भारत का मॉडल केवल आर्थिक वृद्धि पर आधारित नहीं होगा, बल्कि ज्ञान, शिक्षा और नैतिक नेतृत्व पर केंद्रित होगा। एन0ई0पी0 ने भारतीय ज्ञान प्रणालियों और संस्कृत को शिक्षा के मुख्यधारा में शामिल करने का अवसर प्रदान किया है (मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन, नेशनल एजूकेशन पॉलिसी, 2020)। यह अवसर आधुनिक तकनीकी नवाचार जैसे एआई, रोबोटिक्स और कम्प्यूटेशनल लिंग्यूस्टिकस् के साथ संयुक्त होकर राष्ट्र के सतत विकास और नवाचार क्षमता को बढ़ावा दे सकता है (आई0आई0टी0 दिल्ली रिसर्च स्टडीज 2022)। संस्कृति आधारित नेतृत्व न केवल नीति निर्माण में नैतिकता लाता है, बल्कि सामाजिक समरसता और महिला सशक्तिकरण जैसी पहल को भी बढ़ावा देता है। इस दृष्टि से विकसित भारत@2047 के अवसर वैश्विक प्रभाव, सतत विकास, और सांस्कृतिक पुनर्जागरण तीनों में समन्वित हैं (सिंह 2022)। विकसित भारत@2047 की दिशा में चुनौतियाँ और अवसर दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार विकसित भारत केवल आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं होगा, बल्कि सांस्कृतिक, ज्ञानप्रधान और नैतिक दृष्टि से सशक्त राष्ट्र के रूप में उभरने की संभावना रखता है।

निष्कर्ष– विकसित भारत@2047 का लक्ष्य केवल आर्थिक और तकनीकी समृद्धि तक सीमित नहीं है। यह सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक प्रगति के साथ एक संतुलित और समग्र विकास का मॉडल प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा इस दृष्टि में राष्ट्र निर्माण के मूलभूत स्तंभ हैं।

संस्कृत केवल भाषा नहीं, बल्कि ज्ञान, तर्क, दर्शन और विज्ञान का वाहक है। योग, आयुर्वेद, गणित और खगोलशास्त्र में संस्कृत ग्रंथ आज भी आधुनिक विज्ञान और तकनीक के लिए स्रोत और प्रेरणा प्रदान करते हैं। इसके अलावा, संस्कृत में निहित तर्कसंगत संरचना और नियम आधारित व्याकरण आधुनिक के लिए उपयुक्त मॉडल प्रदान करती है।

भारतीय संस्कृति के मूल्य– धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष– के माध्यम से सामाजिक न्याय, नैतिक नेतृत्व और समरसता सुनिश्चित की जा सकती है। महात्मा गांधी ने भी इसे "नैतिकता और अहिंसा का विज्ञान" कहा है, जो केवल व्यक्तिविशेष तक सीमित नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास का आधार है। इसके अलावा, वसुधैव कुटुम्बकम् और एकात्म मानव दर्शन जैसे सिद्धांत वैश्विक स्तर पर भारत के नैतिक और सांस्कृतिक नेतृत्व को मजबूत करते हैं।

विकसित भारत@2047 का मॉडल सतत विकास के दृष्टिकोण से भी प्रासंगिक है। संस्कृति और परंपरा को आधुनिक तकनीक और शिक्षा से जोड़कर, पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग, और सामाजिक कल्याण सुनिश्चित किया जा सकता है। योग, ध्यान और आयुर्वेद के माध्यम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना भी इस दृष्टिकोण का हिस्सा है, जो न केवल व्यक्तिगत बल्कि राष्ट्रीय उत्पादकता और सामूहिक कल्याण में योगदान करता है। अंततः, विकसित भारत@2047 केवल भौतिक

समृद्धि का प्रतीक नहीं होगा, बल्कि यह ज्ञान, संस्कृति और नैतिक नेतृत्व के माध्यम से एक प्रबुद्ध, संतुलित और वैश्विक स्तर पर सम्मानित राष्ट्र के रूप में उभरेगा। संस्कृत और भारतीय संस्कृति इस विकास की आधारशिला और प्रेरक शक्ति बनेंगी। यह दृष्टिकोण न केवल भारत के आंतरिक विकास को सुदृढ़ करेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर उसकी नैतिक और सांस्कृतिक पहचान को भी स्थापित करेगा।

संदर्भ सूची

- औरबिंदो, श्री. द आइडियल ऑफ ह्यूमन यूनिटी. पांडिचेरीरू श्री औरबिंदो आश्रम, 1919।
- भगवद गीता। अनुवादरू राधाकृष्णन, एस. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1948।
- चतुर्वेदी, बी.के. वैदिक विजडम फॉर मॉडर्न एज. दिल्लीरू डायमंड बुक्स, 2019।
- चारक. चारक संहिता. अनुवादरू पी.वी. शर्मा, चौखम्बा ओरिएंटालिया, 2011।
- डिजिटल इंडिया मिशन रिपोर्ट्स। भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, 2023।
- गांधी, महात्मा. यंग इंडियारू कोलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी. नवजीवन पब्लिशिंग, 1924।
- गुप्ता, पंकज. संस्कृत रिवाइवल एंड नॉलेज सिस्टम्स. वाराणसीरू चौखम्बा संस्कृत सीरीज, 2019।
- आईआईटी दिल्ली रिसर्च स्टडीज। "एप्लीकेशंस ऑफ संस्कृत इन एआई एंड कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स।" आईआईटी दिल्ली जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च, खंड 15, अंक 3, 2022, पृष्ठ 102–118।
- मोदी, नरेन्द्र. मन की बातरू विजन फॉर डिवेलप्ड इंडिया@2047, प्रधानमंत्री कार्यालय, 2022।
- संस्कृति मंत्रालय। वार्षिक रिपोर्ट 2023, भारत सरकार, 2023।
- शिक्षा मंत्रालय। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, भारत सरकार, 2020।
- पाणिनि. अष्टाध्यायी. संपादक और अनुवादरू एस.डी. जोशी, डेक्कन कॉलेज, पुणे, 1990।
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय। इंटीग्रल ह्यूमनिज्मः ए फिलॉसफी फॉर इंडिया. भारतीय जनसंघ, 1965।
- पोलॉक, शेल्डन. द लैंग्वेज ऑफ द गॉड्स इन द वर्ल्ड ऑफ मेनरू संस्कृत, कल्चर, एंड पावर इन प्रीमॉडर्न इंडिया. यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 2006।
- राधाकृष्णन, एस. द हिंदू व्यू ऑफ लाइफ. हार्पर कॉलिन्स, 1954।
- राधाकृष्णन, एस. इंडियन फिलॉसफी. खंड 1, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1923।
- राघवन, एस. योग एंड इंडियन कल्चरः ए कंटेम्परेरी स्टडी. नई दिल्लीरू ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2021।
- सेन, अमर्त्य. डेवलपमेंट ऐज फ्रीडम. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2021।

- सेनगुप्ता, रंजन. "रीइमैजिनिंग इंडिया'स डेवलपमेंट एण्ड कल्चरल इंटिग्रेशन।" इंडियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज, खंड 12, अंक 1, 2022, पृष्ठ 44–63।
- शर्मा, रामप्रकाश. भारतीय संस्कृति और आधुनिकता. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2020।
- शर्मा, रमेश. "आयुर्वेद–बेस्ड इनोवेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट इन रूरल इंडिया।" जर्नल ऑफ इंडियन हेल्थ इनोवेशन, खंड 9, अंक 2, 2021 पृष्ठ 77–90।
- सुश्रुत. सुश्रुत संहिता. अनुवादरू कविराज कुञ्जलाल भिषगरत्न, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, 1963।
- सुब्रमणियन, एस. "रिलेवेंस ऑफ संस्कृत इन कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स।" जर्नल ऑफ इंडियन नॉलेज सिस्टम्स, खंड 5, अंक 2, 2020, पृष्ठ 112–128।
- सुब्रमणियन, र. "कम्प्यूटेशनल एप्लीकेशंस ऑफ पाणिनि'स ग्रामर इन मॉडर्न लिंग्विस्टिक्स।" जर्नल ऑफ इंडिक स्टडीज, खंड 4, अंक 3, 2021, पृष्ठ 101–108।
- यूनेस्को। वर्ल्ड कल्चर रिपोर्ट. पेरिसरू यूनेस्को पब्लिशिंग, 2018।
- यूनेस्को। कल्चर 2030, इंडिकेटर्स रिपोर्ट. संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, 2022।
- यूएन योगा रिजॉल्यूशन। संयुक्त राष्ट्र महासभा, रिजॉल्यूशन 69/131, 2014।
- उपनिषद। अनुवाद, एकनाथ ईश्वरन, निलगिरी प्रेस, 2007।
- विवेकानंद, स्वामी। कंप्लीट वर्क्स ऑफ स्वामी विवेकानंद. अद्वैता आश्रम, 1897।
- सिंह, ए.के. "संस्कृत ऐज इंडिया'स सॉफ्ट पावर, कल्चरल डिप्लोमेसी एंड ग्लोबल रिलिवेंस।" इंडियन जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, खंड 122, अंक 2, 2022, पृष्ठ 78–95।
- डब्ल्यूएचओ। ग्लोबल रिपोर्ट ऑन मेंटल हेल्थ एंड वेल–बिइंग. विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2021।
- नीति आयोग। इंडिया@2047, विजन डॉक्यूमेंट. भारत सरकार, 2021।